Chapter 12 तुलसीदास के दोहे

Chapter 12 Tulsidas Couplets

तुलसीदास के दोहे Questions and Answers, Notes, Summary

Tulsidas's Couplets Questions and Answers, Notes, Summary

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिएः

I. Write a reply in a word or phrase or sentence:

प्रश्न 1.

तुलसीदास किस पर विश्वास करते हैं?

What does Tulsidas believe in?

उत्तर:

तुलसीदास भगवान राम (रघुनाथ) पर विश्वास करते हैं।

Tulsidas believe in Lord Rama (Raghunath).

प्रश्न 2.

तुलसीदास किसको आराध्य देव मानते हैं?

Who considers Tulsidas to be an adorable deity?

उत्तर:

तुलसीदास श्रीराम जी को आराध्य देव मानते हैं।

Tulsidas considers Shriram ji as an adorable deity.

प्रश्न 3.

संत का स्वभाव कैसा होता है?

What is the nature of the saint?

उत्तर:

संत का स्वभाव आम के पेड़ की तरह होता है।

The saint's nature is like a mango tree.

प्रश्न 4.

तुलसीदास काया और मन की उपमा किससे देते हैं?

Who gives Tulsidas physique and the subma of the mind?

उत्तर:

तुलसीदास काया को खेत और मन को किसान की उपमा देते हैं।

Tulsidas gives the body a farmer's upma to the farm and mind.

प्रश्न 5.

मधुर वचन से क्या मिटता है?

What is the sweetest word?

उत्तर:

मधुर वचन से अभिमान मिट जाता है।

Haughtiness disappears from the melodious word.

प्रश्न 6.

पंडित और मूर्ख एक समान कब लगते हैं?

When do pundits and fools look alike?

उत्तर:

काम, क्रोध, मद और लोभ को मन में धारण करने पर पंडित और मूर्ख एक समान लगते हैं।

Pandits and fools seem alike when they imbibe work, anger, item and greed in mind.

प्रश्न 7.

तुलसीदास कहाँ जाने के लिए मना करते हैं?

Where does Tulsidas refuse to go?

उत्तर:

तुलसीदास कहते हैं कि जहाँ आदर और स्नेह नहीं मिलता हो वहाँ नहीं जाना चाहिए।

Tulsidas says that where there is no respect and affection, you should not go.

प्रश्न 8.

बिना तेज के पुरुष की अवस्था कैसी होती है?

What is the stage of a man without speed?

उत्तर:

बिना तेज के पुरुष की अवस्था अवज्ञा अथवा आग के बुझने पर राख की तरह उपेक्षित होती है।

The state of a man without speed is neglected like ashes when he is disobedient or extinguished by fire.

अतिरिक्त प्रश्नः

Additional Questions:

प्रश्न 9.

तुलसीदास के अनुसार जग से लोग किस संख्या की तरह नाता रखना चाहिए?

According to Tulsidas, what number should people be associated with the jug?

उत्तर:

तुलसीदास के अनुसार जग से लोग छत्तीस की तरह नाता रखना चाहिए।

According to Tulsidas, people should be associated with jag as thirty-six.

प्रश्न 10.

सुअंब तरू दूसरों के हित के लिए क्या देता है?

What does Suab Taru give for the benefit of others?

उत्तर:

सुअंब तरू दूसरों के हित के लिए फल देता है।

Suab Taru gives fruit for the benefit of others.

प्रश्न 11.

तुलसीदास के अनुसार कौन से दो बीज हैं?

According to Tulsidas, which are the two seeds?

उत्तर:

तुलसीदास के अनुसार पाप और पुण्य दो बीज हैं।

According to Tulsidas, sin and virtue are two seeds.

प्रश्न 12.

दूध के उफान को किससे मिटाया जाता है?

Who is wiped out by the boom of milk?

उत्तर:

दूध के उफान को शीतल जल से मिटाया जाता है।

The milk boom is wiped out with cold water.

प्रश्न 13.

इस संसार में किस प्रकार के लोग हैं?

What kind of people are there in this world?

उत्तर:

इस संसार में भाँति-भाँति के लोग हैं।

There are people of the world like this.

प्रश्न 14.

तुलसीदास किसका त्याग न करने के लिए कहते हैं?

Tulsidas asks for whom not to renounce?

उत्तर:

तुलसीदास अपने कुल की रीति त्याग न करने के लिए कहते हैं।

Tulsidas asks him not to renounce his clan.

प्रश्न 15.

ब्याह और प्रीति किसके साथ करनी चाहिए?

With whom should marriage and affection be with whom?

उत्तर:

ब्याह और प्रीति उसी से करनी चाहिए जो लायक हो।

You should love and love for what is worth.

प्रश्न 16.

किसकी अवज्ञा अवश्य होती है?

Whose disobedience is there?

उत्तर:

बिना तेज के पुरुष की अवज्ञा अवश्य होती है।

There is a disobedience of a man without speed.

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिएः

II. Write answers to the following questions:

प्रश्न 1.

तुलसीदास की रामभक्ति का वर्णन कीजिए।

Describe the Rambhakti of Tulsidas.

उत्तर:

तुलसीदास जी कहते हैं कि मुझे तो केवल मेरे इष्ट राम पर भरोसा है, उसी की आशा, उसी का बल है; जैसे स्वाति नक्षत्र में बारिश के पानी की पहली बूंद के लिए चातक पक्षी तरसता रहता है। अर्थात् मेरे राम यदि स्वाति-सलिल हैं, तो मैं चातक हूँ।

Tulsidas ji says that I only trust my favored ram, his hope is the force of him; For the first drop of rain water in Swathi Nakshatra, the bird is longing. That is, if my ram is Swathi-Salil, I am a chanta.

प्रश्न 2.

तुलसीदास के अनुसार संत के स्वभाव का वर्णन कीजिए।

According to Tulsidas, describe the nature of the saint.

उत्तर:

तुलसीदास जी के अनुसार संत का स्वभाव फलदार आम के वृक्ष की तरह होना चाहिए। आम का वृक्ष दूसरों की भलाई के लिए ही फलता और फूलता है। मनुष्य आम को पाने के लिए पेड़ को पत्थर मारता है, बदले में पेड़ मनुष्य को फल (आम) देता है। उसी प्रकार संतो को चाहिए कि वे लोक निंदा कि परवाह न कर समाज को सुधारने के कार्य में लगे रहें।

According to Tulsidas ji, the nature of the saint should be like a fruit-bearing mango tree. The mango tree thrives and thrives for the betterment of others. Man kills the tree to get the mango, in turn the tree gives fruit to man. Similarly, the Santo should be engaged in the task of improving the society by not caring for public condemnation.

प्रश्न 3.

तुलसीदास ने मधुर वचन के महत्व का कैसे वर्णन किया है?

How has Tulsidas described the importance of the melodious word?

उत्तर:

मधुर वचन के बारे में तुलसीदास जी कहते हैं कि मीठा बोलने से हमारे मन में रहनेवाला अहंकार मिट जाता है। ठीक वैसे ही, जैसे कि उफनते हुए दूध पर थोड़ा-सा ही शीतल (ठंडा) जल छिड़कने से उफनता हुआ दूध नीचे बैठ जाता है।

About the melodious word, Tulsidas ji says that sweet speech destroys the ego in our minds. Just as a little cold water is sprinkled on the surging milk, the surging milk sits down.

प्रश्न 4.

तुलसीदास के अनुसार मनुष्य के जीवन में संतोष-धन का क्या महत्व हैं?

According to Tulsidas, what is the significance of contentment and wealth in human life?

उत्तर:

दुनिया में कई प्रकार के धन हैं। जैसे – गोधन, गजधन, वाजिधन और रतनधन आदि। इन सबके रहते हुए भी अथवा इनको प्राप्त करने पर भी मनुष्य को संतुष्टि नहीं होती। तुलसीदास जी कहते हैं कि जब सन्तोष रूपी धन हमें मिल जाता है, तो ये सभी प्रकार के धन धूल के समान हो जाते हैं। अर्थात् ‘सन्तोष’ ही सबसे बड़ा धन है।

There are many types of wealth in the world. For example, Godhan, Gajdhan, Vajidhan and Ratandhan etc. Human beings are not satisfied even when they all live or receive them. Tulsidas Ji says that when we get the money of contentment, all these kinds of money become like dust. That is, ' contentment ' is the greatest wealth.

प्रश्न 5.

तुलसीदास कुल रीति के पालन करने के सम्बन्ध में क्या कहते हैं?

What does Tulsidas say about following the total practice?

उत्तर:

तुलसीदास जी कहते हैं कि हमें अपने कुल के रीति-रिवाज अथवा कुल की परंपरा का कभी त्याग नहीं करना चाहिए। जो लायक हो उसी से ब्याह कीजिए, जो लायक हो उसी से बैर कीजिए और जो लायक हो, उसी से प्रीति या प्रेम कीजिए।

Tulsidas ji says that we should never renounce the customs of our clan or the tradition of the clan. Marry what is worthy, hate what is worthy, and love or love what is worth.

अतिरिक्त प्रश्नः

Additional Questions:

प्रश्न 6.

तुलसीदास ने छत्तीस अंक को लेकर अपना कौन सा मत प्रकट किया है?

What is your opinion that Tulsidas has expressed on thirty-six points?

उत्तर:

तुलसीदास जी कहते हैं कि मनुष्य को इस संसार अर्थात् सांसारिक मोह माया से 36 का रिश्ता रखना चाहिए। जिस प्रकार छत्तीस में 3 और 6 के अंक एक दूसरे के विपरीत होते हैं उसी तरह हमें भी सांसारिकता चीजों के विपरीत रहना चाहिए।

Tulsidas ji says that man should have a relationship of 36 from this world, that is, worldly fascination, Maya. Just as the points of 3 and 6 in thirty-six are opposite to each other, we should also be contrary to the worldliness things.

प्रश्न 7.

“जैसा कर्म वैसा फल” इस बात को तुलसीदास ने कैसे स्पष्ट किया है?

How has Tulsidas clarified this thing as "karma such fruit"?

उत्तर:

तुलसी ‘जैसा कर्म वैसा फल’ को एक दृष्टांत के माध्यम से समझाते हुए कहते हैं- हमारा शरीर एक खेत है और मन किसान है तथा पाप व पुण्य दोनों बीज हैं। इस प्रकार खेत में जिस प्रकार का बीज बोकर खेती होती है, वैसी ही फसल भी प्राप्त होती है। अर्थात् जीवन में जैसा काम करेंगे हमें फल भी उसके अनुरूप मिलेगा।

Tulsi explains 'as karma such fruit' through an illustration: "Our body is a field and the mind is a farmer and both sin and virtue are seeds. Thus, the kind of seed that is cultivated in the field is also the same crop. That is, we will also get the fruit according to the work you do in life.

प्रश्न 8.

तुलसीदास ने पंडित और मूर्ख की अलग पहचान कैसे बताई है?

How has Tulsidas described the distinct identity of Pandit and fool?

उत्तर:

तुलसी कहते हैं कि जब तक मनुष्य काम (वासना), क्रोध, मद, लोभ से ग्रसित रहता है तब तक वह विद्वान होकर भी मूर्ख के समान है। इसलिए मनुष्य को काम, क्रोध, मद तथा लोभ का शीघ्र ही त्याग कर देना चाहिए।

Tulsi says that as long as a man is obsessed with lust, anger, head, greed, he is also a scholar and a fool. Therefore, man should soon renounce work, anger, item and greed.

प्रश्न 9.

तुलसीदास ने स्वाभिमान की रक्षा और स्नेह स्वागत के बारे में क्या कहा है?

What has Tulsidas said about the defence of self-esteem and the affection reception?

उत्तर:

तुलसीदास कहते हैं कि तेजहीन मनुष्य का इस संसार में सदैव ही अपमान होता है। अतः हर एक मनुष्य को अपना तेज अर्थात स्वाभिमान को बचाएं रखना चाहिए। तेजवान व्यक्ति का कोई भी अपमान नहीं कर सकता।

Tulsidas says that a strong man is always insulted in this world. Therefore, every human being should keep his fast, that is, self-esteem. No one can insult the tejwan person.

प्रश्न 10.

तुलसीदास ने बुझी हुई आग का उदाहरण देकर क्या समझाया है?

What has Tulsidas explained by giving an example of a fire that has been extinguished?

उत्तर:

तुलसी बुझी हुई आग का उदाहरण देकर कहते हैं कि आग के बुझ जाने पर, राख को न केवल छूना आसान हो जाता है, बल्कि उसे लोग कुचल भी देते हैं। उसी तरह तेजहीन मनुष्य को भी लोग अपमानित करते हैं। उसे कुचल देते हैं।

Tulsi exemplifies the extinguished fire, saying that when the fire is extinguished, it becomes easier to touch the ashes, but also crushes the people. In the same way, people also humiliate the fast-poor man. Crush him.

III. ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए:

III. Explain the context:

प्रश्न 1.

तुलसी संत सुअंब तरु, फूलि फलहिं पर-हेत।

Tulsi Sant Suab Taru, Phuli, on the fala.

इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत॥

It is the padhaan, and they give the fruit.

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘तुलसीदास के दोहे’ नामक संग्रह से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

Context: The Doha presented is from our textbook 'Couplets of Tulsidas' of the book 'Sahitya Vaibhav'. Its creator is Tulsidas.

संदर्भ : यहाँ तुलसीदास संत लोगों की विशेषता पर प्रकाश डाल रहे हैं।

Reference: Here Tulsidas Saints are highlighting the characteristic of the people.

स्पष्टीकरण : तुलसीदास कहते हैं कि संत पुरुष उस आम के पेड़ की तरह होते हैं जो हमेशा दूसरों को मीठे फल देता रहता है। बदले में वह कुछ भी नहीं लेता। वह तो दूसरों का उपकार करने के लिए ही फलता-फूलता है। लोग धरती से पत्थर भी फेंकते हैं तो भी वह उन्हें फल ही देता है। संत पुरुष भी ठीक वैसे ही होते है। उनका कितना भी अपमान किया जाए, वे विनम्रता नहीं त्यागते हैं। क्रोध नहीं करते हैं। उनके जीवन का उद्देश्य दूसरों का हित करना ही होता है। एक जगह तुलसी यह भी कहते हैं कि ‘परहित सरिस धर्म नहिं भाई’ अर्थात् दूसरों की भलाई से बड़ा और कोई धर्म नहीं हो सकता। संत पुरुषों के लिए परहित ही धर्म होता है।

Explanation: Tulsidas says that saints are like a mango tree that always gives sweet fruit to others. In return, he does not take anything. He thrives in the way of doing others. Even if people throw stones from the earth, he gives them fruit. Sant Men are also just like that. No matter how insulting they are, they do not renounce humility. They don't rage. The purpose of their lives is to benefit others. In one place, Tulsi also says that there can be no religion greater than the goodness of others. For Saint men, there is a religion.

विशेष : अवधी भाषा का प्रयोग। लोक-कल्याण की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है।

Special: Use of Avanti language. The importance of public welfare has been highlighted.

प्रश्न 2.

तुलसी काया खेत है, मनसा भयौ किसान।

Tulsi Physique is a field, Mansa Bhau Kisan.

पाप पुण्य दोउ बीज हैं, बुवै सौ लुनै निदान॥

Sin virtuous is the two seeds, the Buway hundred Lunai diagnosis.

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘तुलसीदास के दोहे’ नामक संग्रह से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

Context: The Doha presented is from our textbook 'Couplets of Tulsidas' of the book 'Sahitya Vaibhav'. Its creator is Tulsidas.

संदर्भ : यहाँ तुलसीदास जी कहते हैं कि हम जैसे कर्म करते हैं, हमें वैसा ही फल मिलता है, इसलिए हमें हमेशा अच्छे कर्म करने चाहिए।

Reference: Here, Tulsidas ji says that we receive the same fruit as we perform actions, so we should always do good deeds.

स्पष्टीकरण : कवि कहते हैं कि हमारा शरीर खेत है और हमारा मन किसान है। पाप और पुण्य ये दो प्रकार के बीज हैं। अब हम इनमें से जो बीज बोएँगे, हमें वैसा ही फल मिलेगा।

Explanation: Poets say that our body is a farm and our mind is a farmer. Sin and virtue these are two types of seeds. Now we will receive the same fruit that we sow from them.

अतः अच्छा या बुरा फल पाना हमारे ही हाथ में है।

Therefore, it is in our hands to receive good or bad fruit.

प्रश्न 3.

तुलसी एहि संसार में, भाँति भाँति के लोग।

Tulsi in the world, like people.

सब सो हिल मिल बोलिए, नदी नाव संयोग।।

All sleeping hill, say, the river boat coincidence.

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘तुलसीदास के दोहे’ नामक संग्रह से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

Context: The Doha presented is from our textbook 'Couplets of Tulsidas' of the book 'Sahitya Vaibhav'. Its creator is Tulsidas.

संदर्भ : तुलसीदास कहते हैं कि इस जगत में भिन्न भिन्न विचारों के लोग रहते हैं। हमें उनसे मेल मिलाप के साथ रहना चाहिए।

Reference: Tulsidas says that people of different views live in this world. We should live with them.

स्पष्टीकरण : तुलसीदास कहते हैं कि इस संसार में भिन्न-भिन्न विचारों को, धर्मों को मानने वाले लोग रहते है। हमें सबके साथ सहिष्णुता के साथ रहना चाहिए। हमें उनके विचारों, मान्यताओं का सम्मान करना चाहिए। सबसे प्रेमपूर्वक बोलना चाहिए। भिन्न विचारों के साथ समन्वय जरूरी होता है।

Explanation: Tulsidas says that in this world there are different thoughts, people who believe in religions. We should live with tolerance with everybody. We should respect their views, beliefs. You should speak with the most loving. Coordination with different ideas is necessary.

विशेष : अवधी भाषा और ब्रज भाषा का प्रयोग। भिन्न विचारों के बीच समन्वय पर जोर दिया गया है।

Special: Use of Avanti language and Braj language. Emphasis has been given on coordination between different views.

प्रश्न 4.

काम, क्रोध, मद, लोभकी, जौ लौं मन में खान।

Work, anger, item, greedy, barley, mines in mind.

तौं लौ पंडित मूरखौ, तुलसी एक समान।।

Taum flame Pandit Moorkhou, Basil alike.

उत्तर:

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक ‘साहित्य वैभव’ के ‘तुलसीदास के दोहे’ नामक संग्रह से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

Context: The Doha presented is from our textbook 'Couplets of Tulsidas' of the book 'Sahitya Vaibhav'. Its creator is Tulsidas.

संदर्भ : तुलसीदास जी कहते है कि व्यक्ति चाहें जितना बड़ा विद्वान क्यों न हो, जब तक उसके पास अहंकार और लोभ जैसे संस्कार उसमें विद्यमान रहते हैं तब तक वह मूर्ख के समान ही होता है।

Reference: Tulsidas ji says that the more a scholar he wants, as long as he has the sanskars like arrogance and greed, he is like a fool.

स्पष्टीकरण : तुलसीदास कहतें हैं- जब तक हमारे मनरूपी खजाने में काम-क्रोधा आदी अरिषड्वर्ग स्थिर रहते हैं तब तक मूर्ख और पंड़ित एक समान होते हैं। एक साधारण मनुष्य जो उपरोक्त मनोविकारों से बचकर रहता है, वही महान होता है। नहीं तो बड़ा पंडित भी मूर्ख बन जाता है।

Explanation: Tulsidas says, "As long as the work-addicted aristocratic classes in our psychomorphic treasures remain constant, the fools and the pandits are the same. An ordinary man who survives the above mental disorders is great. Otherwise, the big pundit also becomes foolish.

तुलसीदास के दोहे कवि परिचयः

Tulsidas's couplets poet introduction:

महाकवि तुलसीदासजी का जन्म सन् 1532 में हुआ था। आप रामभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार माने जाते हैं। आपके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। आपके गुरु बाबा नरहरिदास थे। आपके आराध्य देव श्री रामचन्द्र थे और लोकमंगल भावना आपके काव्य का सिद्धांत रहा। आपने अन्यान्य काव्यशैलियों का प्रयोग करते हुए कई रचनाएँ हिन्दी साहित्य जगत को समर्पित की। आपकी मृत्यु सन् 1623 में हुई। ‘रामचरित मानस’, ‘विनय पत्रिका’, ‘कवितावली’, ‘गीतावली’, ‘जानकी मंगल’ और ‘दोहावली’ आपकी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ मानी जाती है। आपका अवधी और ब्रजभाषा पर समान अधिकार था।

Mahakavi Tulsidasji was born in 1532. You are considered to be the best designer of the Rambhakti branch. Your father's name was Atamaram Dubey and mother's name, Husasi. Your guru was Baba Narharidas. Your adorable dev was Shri Ramachandra and the Lokmangal spirit was the principle of your poetry. You have dedicated many compositions to the Hindi literary world using non-poetic styles. You died in 1623. 'Ramchanrit Manas', 'Vinay Patrika', 'Kavitawali', 'Geetavali', 'Janaki Mangal' and 'Dohawali' are considered to be your best compositions. You had equal rights on the avanti and the Brahbhasha.

प्रस्तुत दोहों में रामभक्ति, नीति, सदाचार, विनय, दान एवं जीवन के समस्त पक्षों पर प्रकाश डाला गया हैं।

The two presented highlight all aspects of Rambhakti, niti, morality, Vinay, dan and life.

दोहे का भावार्थः

Couplets:

1) एक भरोसो, एक बल, एक आस, विश्वास।

1) A trust, a force, a surroundings, faith.

स्वाति-सलिल रघुनाथ-जस, चातक तुलसीदास ॥१॥

Swathi-Salil Raghunath-Jas, Chaktak Tulsidas II 1.

तुलसीदास जी कहते हैं कि मुझे अपने इष्ट श्रीराम पर पूरा भरोसा है। एक ही बल, एक ही आशा और एक उन्हीं पर अटूट विश्वास है; ठीक वैसे ही जैसे कि भगवान श्री रघुनाथजी यदि स्वाति नक्षत्र का जल है, तो तुलसीदास चातक पक्षी की तरह है।

The poet, Tulasidasji, says that he has complete faith in his beloved Lord Rama. He has only one source of strength, only one desire, and only one unbreakable faith in his master Lord Rama. He says that if Lord Rama is akin to rain (of the swati nakshatra), then he is like a ‘chatak’ bird (a kind of cuckoo which is supposed to drink only drops of rain).

शब्दार्थ :

literal meaning:

भरोसो – भरोसा

Trust in The Trust

स्वाति-सलिल – स्वाति वर्षा का जल;

Swathi-Salil - Swathi rainwater;

जस – कीर्ति;

Jas- Kirti;

चातक – चातक पक्षी।

Chakup-Chakup bird.

2) जग ते रह छत्तीस है, राम चरन छ: तीन।

2. The jug is thirty-six, Ram Chanan six.

तुलसी देखु विचार हिय, है यह मतौ प्रबीन ॥२॥

Tulsi See The Idea, It Is Matu Prabin| 2.

तुलसीदास जी कहते हैं कि मनुष्य को इस संसार से अर्थात् सांसारिक प्रपंच से छत्तीस (३६) जैसा सम्बन्ध रखना चाहिए और परमात्मा के साथ तिरसठ (६३) का सम्बन्ध रखना चाहिए। इसका अभिप्राय यह है कि संसार में रहते हुए भी मनुष्य को संसार के प्रति उदासीनता दिखानी चाहिए और परमात्मा के प्रति हमेशा प्रेम प्रकट करना चाहिए।

Tulasidasji says that man must have a relationship of ’36’ with the world, i.e. with the worldly universe. With the almighty, however, man must establish a relationship of ’63’. What this means is that, although living in a materialistic world like ours, one must show indifference towards the world and towards worldly pleasures. Towards the almighty, however, one must always show love.

शब्दार्थ :

literal meaning:

छत्तीस – 36;

Thirty-six – 36;

छः तीन – 63;

Six three – 63;

हिय – हृदय;

Hiy -heart;

मतौ – अभिप्राय, राय;

meaning, opinion;

प्रबीन – प्रवीण, दक्ष।

Prabin - Proficient, proficient.

3) तुलसी संत सुअंब तरु, फूलि फलहिं पर-हेत।

3) Tulsi Sant Suab Taru, Phuli-

इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत ॥३॥

It is the most fruitful, and they give fruit. 3.

तुलसीदास जी कह रहे हैं कि संत पुरुष उस आम के वृक्ष की भाँति होते हैं। जो आम का वृक्ष दूसरों का उपकार करने के लिए ही फलता-फूलता है। लोग धरती से उसकी ओर पत्थर फेंकते हैं, तो वह आम का फल उन्हें प्रदान करता है। उसी प्रकार संतों का चाहे जितना ही अपमान क्यों न किया जाय, पर वे हम लोगों का उपकार ही करते हैं।

Tulasidasji says that saints and godly men are like a mango tree. They are like the mango tree which flowers and bears fruits only for the sake of others. From the ground, when people throw stones at the mango tree, the tree showers them with fruit. Similarly, no matter how much a saint or godly man is insulted on this earth, he will always bless and wish well for the person who insults.

शब्दार्थ :

literal meaning:

सुअंब तरु – फल से भरा हुआ आम का वृक्ष;

Suamb Taru – a mango tree filled with fruit;

पर-हेत – दूसरों के हित के लिए;

on-the-same – for the benefit of others;

इतते – जितने;

it is as many as;

हनत – मारने से;

by killing;

उतते – उतने ही;

The same as the

पाहन – पत्थर।

Padhan-Stone.

4) तुलसी काया खेत है, मनसा भयौ किसान।

4) Tulsi physique is a field, Mansa Bhau Kisan.

पाप पुण्य दोउ बीज हैं, बुवै सौ लुनै निदान ॥४॥

Sin virtuous are dou seeds, buwe hundred lunai diagnostics. 4.

तुलसीदास जी कहते हैं कि हमारा यह शरीर एक खेत है और मन किसान है तथा पाप व पुण्य दोनों बीज हैं। इस प्रकार खेत में जिस प्रकार का बीज बो कर खेती होती है, वैसी फसल प्राप्त होती है। उसी प्रकार शरीर रूपी खेत में मन रूपी किसान पाप-पुण्य दोनों के बीज डालता है। इनमें से जो भी बीज किसान बोता है, उसी की फसल भी काटता है। अर्थात् मनुष्य का मन ही पाप व पुण्य दोनों में से किसी एक की ओर आकर्षित होता है। हम जैसा बोयेंगे, वैसा ही फल पायेंगे अर्थात् अच्छे कर्मों का फल अच्छा और बुरे कर्मों का फल बुरा मिलेगा।

Tulasidasji says that our body is like a farm, whereas our mind is like a farmer and sin and virtue are like seeds. Thus, whatever type of seed is sown in the farm, the produce of the farm will be of that quality. Similarly, in our body (which is like a farm), our mind (the farmer) sows seeds of both sin and virtue. Whichever seeds the mind nourishes and nurtures will grow and yield produce. What the poet is implying is that the human mind is attracted to either sin or virtue. Whichever one our mind is attracted to, we have to reap the results of that quality. Good deeds always produce good results and bad deeds always produce bad results.

शब्दार्थ :

literal meaning:

काया – शरीर;

physique – body;

भयौ – होता है;

There is fear;

दोऊ – दोनों;

Dou – both;

निदान – अंत में

Diagnosis – finally

5) मधुर बचन तें जात मिटै, उत्तम जन अभिमान|

5) Sweetest childish, sweetest public pride.

तनक सीत जलसों मिटै, जैसे दूध उफान ॥५॥

The water of the water, like milk boom. 5.

तुलसीदास जी कहते हैं कि मधुर वचनों से या मीठी वाणी से अच्छे लोगों का अभिमान भी मिट जाता है। जैसे कि उफनते हुए गरम दूध में थोड़ा-सा ही शीतल (ठंडा) जल डाल देंगे, तो वह शांत हो जाएगा अर्थात् उफनेगा नहीं। इस प्रकार मधुर वचन का लाभ है।

Tulasidasji says that through a soulful song or a sweet voice, the pride (ego) of even good persons is easily erased. It is similar to the act of adding cool water to boiling milk. When we add cool water to boiling milk, the milk which was bubbling and frothing, suddenly becomes calm. Such is the benefit of a touching song or a sweet voice.

शब्दार्थ :

literal meaning:

जात मिटै – मिट जाता है;

The body is erased;

अभिमान – अहंकार, गर्व;

Haughtiness – arrogance, pride;

तनक – थोड़ा

Tensile - Little

सीत जलसो – ठंडा पानी से;

seeth water - with cold water;

उफान – उबराना

boom -

6) गो-धन, गज-धन, वाजि-धन और रतन-धन खान।

6) Go-money, gaj-dhan, Vaji-Dhan and Ratan-Dhan Khan.

जब आवत संतोष-धन, सब धन धूरि समान ॥६॥

When you have the satisfaction of wealth, all the money is the same. 6.

तुलसीदास जी कहते हैं कि मनुष्य के पास भले ही गौ रूपी धन हो, गज (हाथी) रूपी धन हो, वाजि (घोड़ा) रूपी धन हो और रत्न रूपी धन का भंडार हो, वह कभी संतुष्ट नहीं हो सकता। जब उसके पास सन्तोष रूपी धन आ जाता है, तो बाकी सभी धन उसके लिए धूल या मिट्टी के बराबर है। अर्थात् सन्तोष ही सबसे बड़ी सम्पत्ति है।

Tulasidasji says that even if a man has a wealth of corps, or a wealth of elephants, or a wealth of horses or even a wealth of gems and diamonds, he will never be satisfied. When a man comes to possess wealth in the form of satisfaction, then all other forms of wealth are just like dust or sand, i.e., they appear to be worthless. This means that satisfaction and happiness are the.. greatest wealth in the world.

शब्दार्थ :

literal meaning:

वाजि – घोड़ा;

Vaji - Horse;

धूरि – धूल।

Dust.

7) काम, क्रोध, मद, लोभकी, जौ लौं मन में खान।

7) Work, anger, item, greedy, barley, and mines in mind.

तौं लौ पंडित मूरखौ, तुलसी एक समान ॥७॥

Taun Flame Pandit Moorkhau, Tulsi Alike | 7.

तुलसीदास जी कहते हैं कि जब तक मनुष्य के मन में काम (वासना), क्रोध, घमंड, लोभ आदि विकार उत्पन्न होते रहते हैं, तब तक वह विद्वान होते हुए भी मूर्ख के समान है। इसलिए मनुष्य को काम, क्रोध, मद तथा लोभ का शीघ्र ही त्याग कर देना चाहिए।

Tulasidasji says that as long as a person's mind is under the influence of lust (fancy), anger, arrogance, greed and other such bad qualities, till then even if he is a learned person, he is equal to a fool. Thus, the poet warns us that we must stay away from, or immediately abandon qualities like lust, anger, intoxication etc.

शब्दार्थ :

literal meaning:

जौ लौं – जब तक;

barley - until;

तौं लौ – तब तक।

Taum Flame – until then.

8) आवत ही हर्षे नहीं, नैनन नहीं सनेह।

8. Not only the harsh, not the Nanne.

तुलसी तहाँ न जाइए, कञ्चन बरसे मेह ॥८॥

Don't go to Tulsi, Kanchan Barse Meh| 8.

तुलसीदास जी कहते हैं कि यदि किसी के घर जाने पर वह प्रसन्न नहीं होता और उसके नेत्रों में स्नेह नहीं झलकता, तो उसके घर में कभी नहीं जाना चाहिए, भले ही वहाँ सोने की वर्षा क्यों न होती हो। अर्थात् कोई व्यक्ति कितना ही बड़ा अमीर क्यों न हो, उसके घर जाने पर अतिथि सत्कार नहीं होता हो, तो वहाँ नहीं जाना चाहिए।

Tulasidasji says that upon visiting someone's house, if they are not happy to see us, or if we cannot see love reflected in their eyes, then we must never enter that house even if gold is showered in that house. This means that no matter how rich a person is, if we are not welcome in their house, or if guests are not honoured in their house, then we must never go there.

शब्दार्थ :

literal meaning:

नैनन – आँखों में, नयनों में;

Nanning – in the eyes, in the eyes;

आवत ही – आते समय;

at the same time as it comes;

कञ्चन – सोना;

Kanchan – Gold;

मेह – मेघ, बादल

Meh – Cloud, Cloud

9) तुलसी कबहुँ न त्यागिए, अपने कुल की रीति।

9) Do not give up tulsi, the manner of your clan.

लायक ही सो कीजिए, ब्याह, बैर अरु प्रीति ॥९॥

Sleep, marry, hate aru preeti. 9.

तुलसीदास जी कहते हैं कि अपने कुल की रीति को या परंपरा को कभी भी त्यागना नहीं चाहिए। कहा गया है कि जो योग्य हो अथवा लायक हो उसी से विवाह रचाया जाना चाहिए। बैर भी सोच-समझ कर जो उसके लायक हो उसी से करना चाहिए तथा लायक से ही प्रीति करनी चाहिए।

Tulasidasji says that we must never abandon the ways or traditions of our ancestors. It has been said that one must only marry a person who deserves or is worth marrying. Even as our enemies, we must only choose those who are worthy of us. Similarly, one must also love a person who is deserving or worthy of our love.

शब्दार्थ :

literal meaning:

कबहुँ – कभी;

When it came to – sometimes;

लायक – उपयुक्त, ठीक

Worth – suitable, ok

10) बिना तेज के पुरुष की, अवशि अवज्ञा होय।

10. Without a fast man, there is disobedience.

आगि बुझे ज्यों राखको, आपु छुवै सब कोय ॥१०॥

Agari Budhe As Rakhko, Apu Chheva Sab Koya | 10.

तुलसीदास जी कहते हैं कि तेजहीन मनुष्य का संसार में निश्चय ही अपमान होता है। अतः हर एक मनुष्य को अपना तेज, स्वाभिमान को बचाए रखना चाहिए। जिस प्रकार अग्नि के बुझ जाने पर, राख को न केवल स्पर्श करना सरल हो जाता है, अपितु उसे तो लोग रौंद भी देते हैं। वही जलती हुई आग का स्पर्श करना सहज नहीं होता है। उसी प्रकार तेजहीन मनुष्य का अपमान करना सरल है, परन्तु तेजयुक्त व्यक्ति का अपमान कोई नहीं कर सकता।

Tulasidasji says that in this world it is certain that a person without knowledge and education will be insulted. It becomes quite easy to touch the ashes when the fire is extinguished. In fact, the ashes are also trampled upon by people. The same fire, before it is extinguished, is not so easy to touch. In the same manner, an uneducated person is easy to insult, but no one can insult an enlightened person.

शब्दार्थ :

literal meaning:

तेज – तेजस्, स्वाभिमान, कीर्ति;

Fast – Tejas, Swabhiman, Kirti;

अवशि – अवश्य;

Aashashi – must;

अवज्ञा – अनादर, अपमान।

Disobedience – disrespect, humiliation.